सही जानकारी में ही है समझदारी

किशोरावस्था में स्वास्थ्य से जुड़ी जरुरी बातें

नुक्कड़ नाटक पटकथा

आपका भरोसा आपका साथी
युवा मैत्री केन्द्र!

RKSK
Rashtriya Kishor Swasthya Karyakram
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग
झारखण्ड सरकार

स्वस्थ झारखण्ड सुखी झारखण्ड

झारखण्ड सरकार

सब प्रश्नों के उत्तर पाएं

मुनिया झारखंड के एक गांव में रहती है और 17 साल की एक समझदार लड़की है। 10वीं के बोर्ड इम्तिहान में उसके स्कूल में सबसे ज्यादा अंक आए थे। पढ़ाई के साथ–साथ वह आस–पड़ौस और स्कूल, सभी जगह वह सक्रिय रहती है। छोटी–मोटी समस्याओं का हल तो वह चुटकियों में खोज लेती है, इसीलिए उसकी उम्र के और उससे छोटे बच्चे तो उसके कायल है हीं, बड़े भी उसको बहुत समझदार मानते हैं।

मुनिया का दाहिना हाथ है किशोर। 15 साल का यह हंसमुख और थोड़ा चंचल लड़का मुनिया के घर के बगल में रहता है। वह मुनिया के स्कूल में ही उससे दो कक्षा नीचे पढ़ता है और मुनिया ही उसे अपनी साइकिल पर बिठाकर स्कूल ले जाती है। वह पढ़ाई–खेलकूद, सामाजिक कार्यों आदि सभी में सक्रिय रहता है और कहने की जरुरत नहीं कि मुनिया दीदी ही उसकी रोल मॉडल है।

(मुनिया बैठी हुई कुछ सोच रही है। तभी किशोर आता है, वह मुनिया को इस तरह बैठा देखकर चौंकता है, फिर कुछ देर रूककर बोलता है)

किशोरः नमस्ते मुनिया दीदी।

(मुनिया सोच में डूबी हुई है। वह किशोर की आवाज नहीं सुनती)

किशोर (इस बार जोर से): नमस्ते मुनिया दीदी।

मुनियाः अरे किशोर! तुम कब आए?

किशोरः मैं तो बहुत देर से खड़ा हूं दीदी। एक बार आपको आवाज भी दी, लेकिन आपने सुना ही नहीं।

मुनियाः अच्छा?

किशोरः क्या बात है? कुछ परेशान लग रही हो?

मुनियाः नहीं, कोई खास बात नहीं।

किशोरः कुछ न कुछ बात तो जरूर है, बताइए न।

मुनियाः असल में मेरा छोटा भाई भोलू आजकल कुछ अजीब सा हो गया है।

किशोरः ये बात तो है, आजकल खेलने भी नहीं आता, चुपचाप रहता है और कुछ बोलता ही नहीं।

मुनियाः वही तो, घर में भी एक कोने में चुपचाप बैठा रहता है। खाना भी ठीक से नहीं खाता। आजकल पढ़ाई भी नहीं कर रहा है। स्कूल में भी डांट खाता है।

किशोरः ऐसा क्या हो गया है भोलू को।

मुनियाः पता नहीं, लेकिन कोई न कोई बात तो जरूर है। तुमसे तो उसकी खूब बातचीत होती है, तुम्हें कुछ बताया क्या?

किशोरः मैंने भी कई बार कोशिश की, लेकिन वह कुछ बताता ही नहीं, ज्यादा जोर देने पर उठकर चला जाता है, लेकिन कोई न कोई बात ऐसी जरूर है, जिससे वह परेशान है, पर हम लोगों को बताना नहीं चाहता।

मुनियाः लेकिन अगर वह किसी को भी अपनी बात नहीं बताएगा, तो फिर उसकी परेशानी हमें पता कैसे चलेगी।

किशोरः ये बात तो है, आपने चाची से बात की?

मुनियाः माँ तो खुद ही परेशान हैं कि उनके लाड़ले को क्या हो गया।

किशोरः अरे हां दीदी, वो जो सोनी है न, मेरी ममेरी बहन, जो पास के गांव में रहती है।

मुनियाः हां, हां। कुछ महीने पहले तुम्हारी मामी के साथ तुम्हारे घर आई तो थी, कितनी प्यारी है सोनी।

किशोरः दीदी, परसों उसकी मां यानी मेरी मामी हमारे घर आई थीं। उन्होंने बताया कि सोनी भी कुछ परेशान लग रही है आजकल। हर समय सहमी–सहमी और डरी हुई सी रहती है।

मुनियाः इन दोनों का एक तरीका समझ में आ रहा है मुझे।

किशोरः वह क्या दीदी?

मुनियाः अभी उस दिन मां की तबियत खराब थी, तो वो दवा लेने स्वास्थ्य केन्द्र गईं थी, मेरी छुट्टी थी, तो मां मुझे भी साथ ले गईं।

किशोरः तो फिर?

मुनियाः वहां मैंने देखा कि वहां युवा मैत्री केन्द्र का पोस्टर लगा हुआ था।

किशोरः अच्छा? क्या होता है यह युवा मैत्री केन्द्र?

मुनियाः ये तो ज्यादा पता नहीं, लेकिन उसमें लिखा था कि किशोर–किशोरियां स्वास्थ्य संबंधित जानकारी के लिए युवा मैत्री केन्द्र पर संपर्क करें। काउंसलिंग की सेवाएं उपलब्ध हैं।

किशोरः ये काउंसलिंग क्या होता है दीदी?

मुनियाः काउंसलिंग का मतलब तो मुझे पता है, काउंसलिंग माने परामर्श, यानी सलाह। वहां किशोर–किशोरियों को कई तरह की जानकारी और सलाह दी जाती हैं।

किशोरः अच्छा!

मुनियाः उसमें यह भी लिखा था कि किशोर–किशोरी स्वास्थ्य संबंधित अधिक जानकारी के लिए नज़दीकी सदर अस्पताल तथा स्वास्थ्य केन्द्र के युवा मैत्री केन्द्र पर संपर्क कर सकते हैं या टोल फ्री नंबर 104 पर संपर्क कर सकते हैं।

किशोरः फिर तो हमें इन दोनों को साथ लेकर युवा मैत्री केन्द्र चलना चाहिए। हम लोग भोलू और सोनी दोनों को साथ लेकर चलेंगे।

मुनियाः नहीं, साथ–साथ नहीं। इससे उन दोनों को लगेगा कि उनकी बात दूसरों तक जा रही है और इससे भी पहले मैं एक बार काउंसलर दीदी से मिल लूंगी।

किशोरः तब ठीक है। हम उन दोनों को बारी–बारी युवा मैत्री केन्द्र लेकर जाएंगे। पहले भोलू को लेकर चलते हैं।

मुनियाः लेकिन वह तो तब होगा, जब तुम मुझे अपनी पढ़ाई करने दोगे और तुम्हारा भी तो पढ़ाई का समय हो रहा है।

किशोरः ठीक है दीदी, चलता हूं।

मुनियाः ठीक है, कल मिलते हैं।

(दृश्य बदलता है। मुनिया, किशोर और भोलू काउंसलर दीदी के पास पहुंचते हैं)

मुनियाः नमस्ते दीदी।

काउंसलर दीदीः आओ मुनिया, ये दोनों कौन हैं?

मुनियाः दीदी, यह किशोर है और यह है भोलू। भोलू आपसे बात करना चाहता है।

काउंसलर दीदीः अरे वाह, हम तो खुद ही भोलू से बात करना चाहते हैं। तो ठीक है, अब मैं भोलू से अपने कमरे में बात करूंगी, तुम लोग यहीं बैठो।

(काउंसलर दीदी भोलू के साथ दूसरे कमरे में चली जाती हैं)

किशोरः दीदी, एक बात बताओ।

मुनियाः बोलो।

किशोरः क्या भोलू को युवा मैत्री केन्द्र लाना जरूरी था? आप भी तो इतनी समझदार हैं, आप भी तो भोलू को सलाह दे सकती थीं।

मुनियाः नहीं किशोर, युवा मैत्री केन्द्र पर जो काउंसलर होते हैं, वे प्रशिक्षित लोग होते हैं। किशोर– किशोरियों की जो दिक्कतें होती हैं, उनकी जो शंकाएं और भ्रांतियां होती हैं, अक्सर उनका समाधान दोस्त तो दोस्त, कई बार तो घर के बड़े लोग भी नहीं दे पाते।

बढ़ती उम्र के कुछ सवाल हैं, कुछ भ्रांतियां, कुछ शंकाएं,
इन मुश्किल प्रश्नों के उत्तर, शायद दोस्त नहीं दे पाएं,
युवा मैत्री केन्द्र पर आकर खुलकर मन की बात बताएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

किशोरः अरे वाह, यह तो कविता हो गई।

मुनियाः और नहीं तो क्या।

किशोरः अच्छा दीदी, एक बात और पूछूं?

मुनियाः बिलकुल पूछो।

किशोरः ये काउंसलर दीदी ने भोलू से हमारे सामने बात क्यों नहीं की?

मुनियाः ये बताओ, अगर तुम्हारी कोई समस्या हो तो क्या तुम यह चाहोगे कि वह समस्या सबको पता चले?

किशोरः बिलकुल नहीं। मैं अपने मन की बात सबको थोड़े ही बताऊंगा।

मुनियाः लेकिन मुझे तो बताते हो न?

किशोरः आपकी बात अलग है।

मुनियाः क्यों?

किशोरः क्योंकि मुझे मालूम है कि आप मेरी बताई हुई हर बात को अपने तक ही रखेंगी।

मुनियाः यही तो काउंसलर दीदी करती हैं, वह एक की बात दूसरे से नहीं कहतीं।

किशोरः तब तो काउंसलर दीदी बिलकुल दोस्तों की तरह हैं।

मुनियाः बिलकुल, इसीलिए तो उन पर भरोसा किया जा सकता है।

काउंसलर हैं बड़े अनुभवी, आपके मन को ये समझेंगे
और एक अच्छे दोस्त के जैसे, बात को अपने तक ही रखेंगे
इन प्यारे दोस्तों से मिलने, खुद आएं, दोस्तों को लाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

(कुछ देर बाद काउंसलर दीदी और भोलू आते हुए दिखते हैं)

किशोरः अरे वो देखो दीदी, काउंसलर दीदी और भोलू आ रहे हैं।

मुनियाः अरे भोलू तो बड़ा खुश दिख रहा है। क्या आपने भोलू पर कोई जादू कर दिया है काउंसलर दीदी।

काउंसलर दीदीः अरे नहीं, जादू तो भोलू ने किया है।

मुनियाः भोलू को क्या दिक्कत थी दीदी?

काउंसलर दीदीः कुछ नहीं, बहुत दिनों से भोलू को किसी ने चुटकुले नहीं सुनाए थे। मैंने उसे चुटकुले सुनाए और वह बिलकुल पहले की तरह हो गया।

किशोरः अरे वाह! तब तो हम भी सुनेंगे चुटकुले।

काउंसलर दीदीः अरे मैं मजाक कर रही थी किशोर। वैसे तो मैं भोलू की जानकारियां आप लोगों को न बताती, लेकिन भोलू खुद ही चाहता है कि वह अपनी परेशानी आप दोनों को बताए।

भोलूः थोड़ा सा आप बता दीजिए न दीदी, बाकी मैं बता दूंगा।

काउंसलर दीदीः असल में भोलू की दिक्कतें दो थीं। उससे बात करने के बाद मुझे पता चला कि वह शरीर में हो रहे बदलावों से परेशान है। मैंने उसे खुलकर अपनी बात कहने दी और समस्या को समझने के बाद उसे सलाह दी।

मुनियाः तो क्या अब भोलू को सब समझ में आ गया है?

काउंसलर दीदीः शरीर में हो रहे बदलावों के बारे में भोलू की जो चिंताएं थीं, उनका तो समाधान हो गया है। अब भोलू को पता है कि ये बदलाव सभी के शरीर में होते हैं और भोलू के साथ कुछ भी अलग नहीं हो रहा है। अभी वह ये सब जानकारियां आप दोनों को भी देगा और दर्शकों को भी।

मुनियाः अरे वाह! आपने तो कमाल ही कर दिया दीदी।

काउंसलर दीदीः नहीं मुनिया, मेरा तो यह काम भी है और फर्ज भी। मुझे तो परामर्श देने के लिए प्रशिक्षित भी किया गया है। असल कमाल तो तुमने किया है, भोलू को यहां युवा मैत्री केन्द्र पर लाकर।

मुनियाः अरे नहीं दीदी।

काउंसलर दीदीः और हां, भोलू की दूसरी दिक्कत उसकी पढ़ाई को लेकर थी। असल में भोलू गणित में थोड़ा कमजोर है। उसे लगता है कि गणित की वजह से वह आने वाले इम्तिहान में फेल हो जाएगा और इस वजह से भी वह काफी परेशान था। मुझसे बात करके इम्तिहान को लेकर उसका डर कुछ कम तो हुआ है, लेकिन मुझे इसमें तुम्हारी मदद की भी जरुरत है। तुम्हें गणित में भोलू की मदद करनी होगी।

मुनियाः लेकिन यह बात तो.....!

काउंसलर दीदीः तुम यही कहना चाहती हो न कि यह बात तो भोलू खुद तुमसे कह सकता था। क्या उसकी पढ़ाई को लेकर तुम्हारी कभी उससे बात हुई?

मुनियाः नहीं, बात तो नहीं हुई।

काउन्सलर दीदीः बस यही तो बात है। न तो तुमने और घर में किसी और ने उससे पढ़ाई में उसकी दिक्कतों के बारे में पूछा और न उसने किसी को बताया। मैं चूंकि लगातार भोलू की उम्र के किशोर–किशोरियों में इस तरह की दिक्कतें देखती हूं, इसलिए मैंने उसे सिर्फ अपनी बात कहने के लिए प्रेरित किया।

मुनियाः यह तो हमारी गलती थी ही।

काउंसलर दीदीः अरे नहीं, इसमें गलती वाली कोई बात नहीं। तो अब नंबर है भोलू का, बताओ भोलू।

किशोरः भोलू के साथ–साथ कुछ बातें मैं भी बताऊं।

काउंसलर दीदीः बिलकुल तुम भी बताओ।

भोलूः हमारी उम्र की खास बात यह है कि शरीर और मन में बहुत से बदलाव आते हैं।

मुनियाः अरे वाह भोलू!

किशोरः लम्बाई और वज़न बढ़ने लगता है, शरीर का आकार बदलने लगता है।

काउंसलर दीदीः बहुत बढ़िया किशोर!

भोलूः बगलों तथा यौन अंगों के पास बाल आने लगते हैं।

मुनियाः बिलकुल ठीक।

किशोरः लड़कों की आवाज भारी होने लगती है।

काउंसलर दीदीः और?

भोलूः लड़कियों में माहवारी की शुरुआत होती है।

मुनियाः बस इतना ही?

भोलूः नहीं अभी और भी है। ये बदलाव सिर्फ शरीर में ही नहीं होते, मन में भी होते हैं।

मुनियाः अरे वाह!

किशोरः न तो आपको बच्चा माना जाता है, न ही बड़ा।

भोलूः कई तरह के दबाव रहते हैं और कई तरह की चिंताएं।

किशोरः कभी नाचने का मन करता है, फिर कुछ ही देर में रोने का।

भोलूः किसी चीज़ में मन नहीं लग पाता और मन इधर–उधर भटकता है।

काउंसलर दीदी: अरे वाह भोलू और किशोर। अब इसी बात को अगर कविता में कहा जाए तो?

मुनिया: चलो, सब लोग मिलकर कोशिश करते हैं, तुम शुरू करो भोलू।

भोलू: खुद भी बहुत भटकता है मन, और हमको भी भटकाता है।

मुनिया: क्यों शरीर ये बदल रहा है, और महीना क्यों आता है।

किशोर: दोस्तों को कुछ पता नहीं हैं, मम्मी को कैसे बतलाएं।

काउंसलर दीदी: सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

भोलू: अरे वाह! हमने तो बढ़िया कविता बना दी। एक बार फिर से दोहराते हैं।

(सभी इसी क्रम को फिर से दोहराते हैं)

मुनिया: मजा आ गया।

काउंसलर दीदी: लेकिन यहीं पर बात खत्म नहीं होती, अभी कुछ जरूरी बातें और भी हैं।

मुनिया: इस बार मैं शुरू करती हूं दीदी।

काउंसलर दीदी: अरे जरूर शुरू करो। नेकी और पूछ–पूछ?

मुनिया: सीखने–पढ़ने में दिक्कत हो, काम में ध्यान न लग पाता हो।

भोलू: नशे की आदत हो, टेंशन हो, बिन कारण मन घबराता हो।

किशोर: चाहे कोई बीमारी हो, या फिर मन की हों दुविधाएं।

काउंसलर दीदी: सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनिया: अरे वाह! हम सबने तो मिलकर बड़ी अच्छी कविता तैयार कर दी। अब हम इसे दूसरों को भी सिखा सकते हैं।

भोलू: अरे हां! एक बात बताना तो मैं भूल ही गया था। काउंसलर दीदी ने और भी कुछ बातें बताईं। उन्होंने बताया कि बड़ी उम्र में बीमारियां न हों, इसलिए बचपन से ही फल और सब्ज़ियों का सेवन करना चाहिए। तेल, घी, चीनी, नमक कम खाना चाहिए, फास्ट फूड तो बिलकुल ही नहीं। हर रोज कसरत भी करनी चाहिए।

मुनिया: बस इतना ही बताया दीदी ने?

भोलू: उन्होंने यह भी बताया कि खून की कमी से बचाव के लिए आयरन वाला खाना ज्यादा खाना चाहिए। और हां साथ ही उन्होंने कीड़ों की गोली और आयरन की गोली के बारे में भी बताया।

काउंसलर दीदी: और एक चीज छूट गई भोलू।

भोलू: अरे हां, एक और चीज बताई थी काउंसलर दीदी ने। उन्होंने बताया कि किसी भी तरह का नशा करना बहुत खतरनाक होता है। इससे आगे चलकर खतरनाक और जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं, पैसों की बर्बादी होती है, नशे में मारपीट–झगड़े और दुर्घटना भी हो जाती हैं और परिवार व समाज पर भी बुरा असर पड़ता है।

काउंसलर दीदी: तुम्हें तो सब याद हो गया भोलू। अब इन बातों को अपने दोस्तों को भी बताना।

भोलू: जरूर बताऊंगा दीदी, किशोर भी बताएगा।

मुनिया (किशोर और भोलू से कहती है): अच्छा किशोर और भोलू, अब तुम लोग चलो। मुझे काउंसलर दीदी से कुछ बात करनी है।

किशोर: ठीक है दीदी। चलो भोलू, चलते हैं।

(किशोर और भोलू चले जाते हैं)

मुनिया: दीदी, मुझे आपसे कुछ और बात भी करनी है।

काउंसलर दीदी: बोलो, बोलो। तुम बेहिचक अपनी बात पूछ सकती हो।

मुनिया: असल में ये जो अपना किशोर है न, उसकी ममेरी बहन है सोनी। वह भी भोलू की तरह बहुत गुमसुम सी हो गई थी। वह बहुत डरी–डरी सी भी रहती थी। भोलू ने जब मुझे उसके बारे में बताया तो मैं उससे मिलने गई। पहले तो सोनी संकोच कर रही थी, लेकिन फिर जब उसे लगा कि वह मेरा विश्वास कर सकती है, तब उसने मुझे असल बात बताई।

काउंसलर दीदी: विश्वास जीतना तो बहुत जरूरी है। मैं भी तो सबसे पहले यही करती हूं। अच्छा तो सोनी ने क्या बताया?

मुनिया: दीदी, सोनी ने जो बताया, उसे सुन मैं तो एकदम चौंक ही गई थी।

काउंसलर दीदी: अच्छा! ऐसा क्या हुआ?

मुनिया: आप तो जानती ही हैं दीदी कि खराब लोग तो हर जगह होते हैं। सोनी की छोटी बुआ की शादी थी। शादी की भीड़–भाड़ में बड़ी उम्र का एक आदमी, जो सोनी का दूर का रिश्तेदार भी था, उसने अकेले में सोनी को कुछ गंदी बातें कहीं और उसे छूने की कोशिश की।

काउंसलर दीदी: अरे बाप रे! यह तो बहुत गलत हुआ।

मुनिया: हां दीदी। तब सोनी उसे धक्का देकर किसी तरह बचकर तो निकल आई, लेकिन वह बहुत ज्यादा घबरा गई थी।

काउंसलर दीदी: तो क्या उस आदमी ने फिर कोई हरकत की?

मुनिया: नहीं दीदी। उसके बाद तो सोनी भीड़ में आ गई थी। वह आदमी उसके साथ अब कुछ गलत नहीं कर सकता था। वह सोच रही थी कि इस बात को किसी बड़े को

बताए, लेकिन तभी वह आदमी उसके बगल में आया और धीमी आवाज में उससे बोला कि अगर सोनी ने इस बात को किसी को बताया, तो वह उलटा सोनी की बदनामी कर देगा और उसके पिता को मार डालेगा। दीदी इन सब बातों से सोनी बहुत डरी हुई है। क्या आप उसकी मदद कर सकती हैं?

काउंसलर दीदीः बिलकुल। मैं उसकी मदद करूंगी। तुम उसे मेरे पास ला सकती हो?

मुनियाः हां दीदी।

काउंसलर दीदीः तब ठीक है। मैं उसका डर दूर करने के लिए उसकी काउंसलिंग तो करूंगी ही, लेकिन हमें उसके घरवालों से भी बात करनी होगी। तुम कल ही उसे लेकर आ जाओ।

मुनियाः ठीक है दीदी। मैं कल ही सोनी को लेकर आती हूं।

(अगला दृश्य.....मुनिया और सोनी बात कर रहे हैं।)

मुनियाः तुम्हें खुश देखकर बहुत अच्छा लग रहा है सोनी।

सोनीः सब आपने ही तो किया दीदी। मेरी खुशी तो आप और काउंसलर दीदी ही वापस लेकर आईं।

मुनियाः अरे नहीं सोनी। मैंने तो सिर्फ काउंसलर दीदी से बात की और तुम्हें उनसे मिलवाया। बाकी सब तो उन्होंने ही बताया।

सोनीः हां, काउंसलर दीदी ने मेरा डर भी कम किया और मां–बाबा से भी मिलीं। फिर सभी लोग गांव के मुखिया जी और प्रमुख लोगों से मिले। सबने मिलकर मुझे परेशान करने वाले आदमी से बात की। पहले तो उस गंदे आदमी ने अपनी हरकत को साफ–साफ मना कर दिया, लेकिन थाना–पुलिस की बात करने पर उसने अपनी गलती मान ली और माफी मांगने लगा।

मुनियाः तुमने भी तो बहुत हिम्मत दिखाई सोनी।

सोनीः यह हिम्मत भी तो काउंसलर दीदी और आपने ही बंधाई। आप दोनों ने ही तो कहा कि इस तरह की बातों का खुलकर विरोध करना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति किसी लड़के या लड़की के साथ छेड़छाड़ करे, शारीरिक टिप्पणी करे या गलत तरीके से छुए तो यह यौन हिंसा होती है।

मुनियाः सिर्फ यौन हिंसा ही नहीं, हर तरह की हिंसा का विरोध तुरंत करना चाहिए।

सोनीः आप ठीक कहती हैं दीदी। मारपीट के अलावा भी कई तरह की हिंसा हो सकती हैं। मारपीट तो शारीरिक हिंसा है ही, लेकिन अगर कोई आपको गाली दे, डराए या ताने कसे, तो वह भी हिंसा होती है। मौखिक यानी जुबानी हिंसा।

मुनियाः ऐसे ही अगर कोई आपके साथ लड़का या लड़की होने के कारण यानी लिंग के आधार पर भेदभाव करे, या जबरदस्ती करे, या आप पर कोई दबाव डाले, तो यह भावनात्मक हिंसा कहलाती है।

सोनीः अगर किसी भी किशोर–किशोरी के साथ हिंसा हो रही है, तो उन्हें तुरंत किसी भरोसेमंद व्यक्ति को तुरंत बताना चाहिए।

मुनियाः बिलकुल ठीक कहा। चुप रहने से बात बिगड़ती ही है।

सोनीः चुप रहने से बदतमीजी या दूसरी तरह की हिंसा करने वाले व्यक्ति का हौसला बढ़ता है।

सोनीः इस बात को कविता में कहूं दीदी?

काउंसलर दीदीः बिलकुल कहो सोनी।

सोनीः घर में या बाहर कोई तुमको, मारता–छेड़ता–धमकाता है,

गलत तरह से छुए शरीर को, कुछ करने को बहकाता है,

मन ही मन में घुटन रहे, और किसी से कह न पाएं,

सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः शाबाश सोनी! तुम तो बहुत अच्छी कविता लिखती हो। और हाँ, तुम्हें तो याद है न कि युवा मैत्री केन्द्र में सिर्फ शरीर और मन की उलझनों का समाधान ही नहीं बताया जाता, बल्कि मानसिक तनाव, खान–पान के बारे में सही सलाह भी दी जाती है।

सोनीः इसके अलावा कीड़ों और आयरन की गोली मिलती है, नैपकिन मिलते हैं, दवाएं मिलती हैं, अनुभवी लोगों द्वारा काउंसलिंग भी की जाती है।

मुनियाः और हां, ये सब कुछ बिलकुल फ्री हैं। इसकी कोई फीस नहीं लगती।

सोनीः इसलिए मन की, शरीर की, हर तरह की परेशानियों, सवालों और दुविधाओं का हल पाने के लिए किशोर–किशोरियों को युवा मैत्री केन्द्र आना चाहिए।

मुनियाः उनके माता–पिता और घर के बड़े भी किशोर–किशोरियों को लेकर आएं।

सोनीः युवा मैत्री केन्द्र में किशोर–किशोरियों के सब प्रश्नों के उत्तर और सब शंकाओं के समाधान हैं।

मुनियाः लेकिन अब हमें ये सब जानकारियां लोगों को देनी होंगी। तुम तो साथ दोगी न?

सोनीः बिलकुल दीदी।

मुनियाः तो अब चलें?

सोनीः चलिए।

(दोनों एक–दूसरे का हाथ पकड़कर चल देती हैं।)

सोनी की शादी नहीं होनी

मुनिया झारखंड के एक गांव में रहने वाली, 17 साल की एक समझदार लड़की है। 10वीं के बोर्ड इम्तिहान में उसके स्कूल में सबसे ज्यादा अंक आए थे। पढ़ाई के साथ–साथ आस–पड़ौस और स्कूल, सभी जगह वह सक्रिय रहती है। छोटी–मोटी समस्याओं का हल तो वह चुटकियों में खोज लेती हैं, इसीलिए उसकी उम्र के और उससे छोटे बच्चे तो उसके कायल हैं ही, बड़े भी उसकी समझदारी का लोहा मानते हैं।

मुनिया का दाहिना हाथ है किशोर। 15 साल का यह हंसमुख और थोड़ा चंचल लड़का मुनिया के घर के बगल में रहता है। वह मुनिया के स्कूल में ही उससे दो कक्षा नीचे पढ़ता है और मुनिया ही उसे अपनी साइकिल पर बिठाकर स्कूल ले जाती है। वह पढ़ाई–खेलकूद और सामाजिक कार्यों, सभी में सक्रिय रहता है और कहने की जरुरत नहीं कि मुनिया दीदी ही उसकी रोल मॉडल है।

(किशोर घर के बाहर उदास सा बैठा है। मुनिया आती है)

मुनियाः क्या बात है किशोर? इतने परेशान क्यों दिखाई दे रहे हो।

किशोरः बात ही परेशानी की है दीदी।

मुनियाः लेकिन बात क्या है, यह भी बताओगे कि नहीं?

किशोरः आपको नहीं बताऊंगा, तो किसे बताऊंगा दीदी।

मुनियाः तो बताओ।

किशोरः बात असल में यह है कि वो जो मेरी ममेरी बहन है न.....

मुनियाः हां, वही अपनी सोनी।

किशोरः हां, वही।

मुनियाः क्या हुआ उसे? सब ठीक तो है?

किशोरः अब तक तो ठीक है, लेकिन अब ठीक नहीं रहेगा।

मुनियाः पहेलियां मत बुझाओ किशोर। साफ–साफ बताओ बात क्या है?

किशोरः उसकी शादी के लिए रिश्ता आया है।

मुनियाः रिश्ता आया है? क्या बात कर रहे हो? अभी तो वह सोलह की भी नहीं हुई।

किशोरः यही तो बात है दीदी। सोनी बहुत परेशान है। उसने मुझे फोन किया, लेकिन अकेला मैं क्या कर सकता हूं।

मुनिया: अरे तुम अकेले कहां हो किशोर! तुम्हारी ये मुनिया दीदी किस लिए है!

किशोर: लेकिन हम क्या करेंगे दीदी?

मुनिया: हम युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी से मिलेंगे। मैं उनसे बात कर लेती हूं। तुम ऐसा करो कि कल सोनी को भी बुलवा लो। हम उसे लेकर युवा मैत्री केन्द्र चलेंगे।

किशोर: कोई तरीका तो निकल आएगा न दीदी?

मुनिया: बिलकुल निकलेगा किशोर। हम लोग किसी भी कीमत पर इस शादी को नहीं होने देंगे।

(दृश्य बदलता है। मुनिया, किशोर और सोनी युवा मैत्री केन्द्र पर काउंसलर दीदी के पास पहुंचते हैं)

मुनिया: नमस्ते दीदी।

काउंसलर दीदी: अरे नमस्ते–नमस्ते! मैं तुम लोगों का ही इंतजार कर रही थी। कैसे हो तुम लोग?

किशोर: ठीक हैं दीदी।

काउंसलर दीदी: और तुम कैसी हो सोनी?

सोनी: मुझे बचा लो दीदी। (जोरों से रोने लगती है। काउन्सलर दीदी उसे गले लगा लेती हैं।)

काउंसलर दीदी: घबराओ नहीं सोनी। हम लोग तो हैं न!

(थोड़ी ही देर में सोनी सहज हो जाती है।)

सोनी: आपको तो किशोर ने बताया ही होगा कि हमारे एक रिश्तेदार कोई रिश्ता लेकर आए हैं। उनका लड़का उन्नीस साल का है और बी.ए. में पढ़ रहा है। उसके साथ मेरी शादी की बात चला रहे हैं, लेकिन मैं पढ़ना चाहती हूं दीदी (कहते हुए फिर से रोने लगती है)।

मुनिया: फिक्र मत करो सोनी। अगर तुम थोड़ी हिम्मत और समझदारी से काम लोगी, तो हम इस समस्या का समाधान निकाल लेंगे। तुम्हारी शादी तो हम नहीं होने देंगे।

काउंसलर दीदी: तुम्हें तो पता ही है कि राष्ट्रीय किशोरावस्था स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत हर गांव में एक किशोर और एक किशोरी को साथिया के तौर पर नियुक्त किया गया है। गांव के किशोर–किशोरियां महीने में एक दिन किशोर–किशोरी स्वास्थ्य दिवस भी मनाते हैं। तुम उन लोगों को साथ में लेकर सोनी के गांव के मुखिया जी से मिलो और उनसे कहो कि तुम लोग गांव के सभी लोगों की एक बैठक या पंचायत जैसी करना चाहते हो और इस पंचायत में सोनी के माता–पिता को जरूर बुलाया जाए। मुखिया जी तो गांव के सभी लोगों को सूचना देंगे ही, इसके साथ ही तुम लोग गांव के किशोर–किशोरियों की बैठक बुलाकर उन्हें भी अपने साथ ले लो।

और तुम्हें इस बैठकों में जो–जो बातें करनी हैं, वह मैं बताती हूं. गौर से सुनो.....

(धीरे–धीरे बताना शुरू करती है। कुछ देर तक उनकी सिर्फ मुद्राएं ही दिखती हैं। इसके बाद काउंसलर दीदी सामान्य आवाज में कहती हैं।)

काउंसलर दीदी: तो समझ गए न सब?

सभी मिलकर जवाब देते हैं: बिलकुल समझ गए दीदी।

काउंसलर दीदी: तो फिर सोनी के गांव जाओ। वहां जो कुछ भी हो, बताते रहना।

(पंचायत का दृश्य है। गांव के बहुत से लोग इसमें शामिल हुए हैं।)

मुखिया जी: प्यारे गांववासियों, आप जानते ही हैं कि राष्ट्रीय किशोरावस्था स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत हमारे गांव में एक किशोर और एक किशोरी को साथिया के तौर पर नियुक्त किया गया है। गांव के किशोर–किशोरियां महीने में एक दिन किशोर–किशोरी स्वास्थ्य दिवस भी मनाते हैं। कल हमारे गांव के साथिया के साथ पास के गांव की एक लड़की मुझसे मिली। इसका नाम मुनिया है और यह पंचायत इसी लड़की के निवेदन पर बुलाई गई है। मैं चाहता हूं कि आज की यह पंचायत गांव के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति हीरा चाचा जी की देखरेख में चले।

कई लोग: बहुत अच्छा।

हीरा चाचा जी: लेकिन मुखिया जी, एक बात समझ में नहीं आई। हमारे गांव की पंचायत का दूसरे गांव की लड़की से क्या मतलब?

मुखिया जी: मतलब है चाचा जी। बहुत बड़ा मतलब है। इस लड़की का कहना है कि हमारे गांव में एक शादी होने जा रही है, जो गैर कानूनी है।

हीरा चाचा जी: शादी में गैर कानूनी क्या हो सकता है? आखिर मामला क्या है?

मुखिया जी: यह सब तो मुनिया ही बताएगी। आओ बिटिया, अपनी बात पंचायत के सामने रखो।

मुनिया: गांव के सभी लोगों को मेरा प्रणाम। जैसा कि मुखिया जी ने बताया, मेरा नाम मुनिया है और मैं पास के गांव की रहने वाली हूं। मुझे खबर मिली कि आपके गांव में बहुत कम उम्र की एक लड़की की शादी होने जा रही है।

हीरा चाचा जी: हमारे गांव में किसी लड़की की शादी होने जा रही है, तो इससे तुम्हें क्या मतलब?

मुखिया जी: मतलब तो बिलकुल है चाचा जी। जैसे मैं, वैसे ही इस गांव की लड़की।

हीरा चाचा जी: चलो ठीक है। पंचायत तो बुलाई ही गई है। तुम्हें अपनी बात रखने का मौका भी मिलेगा ही। अब बताओ कि किसकी शादी होने जा रही है और उसमें गलत क्या है?

मुनियाः धन्यवाद दादा जी। बात असल में यह है कि आपके गांव के लखन चाचा जी अपनी बिटिया सोनी की शादी तय कर रहे हैं, लेकिन अभी सोनी की उम्र सोलह भी नहीं हुई है। अभी वह दसवीं में पढ़ाई कर रही है। शादी करने से उसकी पढ़ाई छूट जाएगी, इतनी छोटी सी उम्र में ही उस पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाएगी। मुझे युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी ने बताया है कि कम उम्र में शादी करना लड़के और लड़की दोनों के लिए ही ठीक नहीं होती है। उन्होंने यह भी बताया कि 21 से कम उम्र में लड़के की और 18 से कम उम्र में लड़की की शादी करना गैर कानूनी है।

मुखिया जीः मुनिया, तुम पंचायत को यह बताओ कि तुम पंचायत से क्या चाहती हो?

मुनियाः मैं यह चाहती हूं मुखिया जी कि गांव के लोग मिलकर लखन चाचा जी को इस बात के लिए मनाएं कि वे अभी सोनी की शादी न करें।

मुखिया जीः बताओ भाई लखन, तुम्हारा क्या कहना है?

लखनः मुखिया जी, मुझे तो यह समझ में नहीं आ रहा कि मेरी गलती क्या है, जो मुझे किसी मुजरिम की तरह यहां खड़ा कर दिया गया है। बेटी की शादी तो बाप की जिम्मेदारी होती है न!

मुनियाः लेकिन चाचा जी, अभी अगर आप उसकी शादी कर देंगे, तो उसकी पढ़ाई अधूरी छूट जाएगी।

लखनः लड़की जात है, पढ़–लिख के उसे कौन कलेक्टर बनना है।

मुनियाः बन भी सकती है चाचा जी। भूल गए कि हमारे जिले की कलेक्टर भी एक लड़की ही है। बगल के जिले में तो पुलिस कप्तान भी है। अब लड़कियां प्रोफेसर भी है और फौज की अफसर भी, दफ्तर भी चला रही हैं और रेल–हवाई जहाज भी।

लखनः तुम बहुत फालतू बात कर रही हो। अगर सही उम्र में लड़कियों की शादी न करके उन्हें पढ़ने के लिए भेजो, तो लड़कियां घर से भाग जाती हैं। अभी पिछले महीने की बात है, बगल के गांव में एक लड़की भाग गई।

मुनियाः आपको भागी हुई लड़की तो दिखी चाचा जी, लेकिन ये नहीं दिखा कि उसी गांव की एक लड़की पुलिस में सब इन्स्पेक्टर बन गई। उसी गांव की एक लड़की प्रदेश के खेलकूद में गोल्ड मेडल लेकर आई है। सोचिए अगर कम उम्र में इन लड़कियों को ब्याह दिया जाता, तो क्या ये लड़कियां अपने परिवार और गांव का नाम रोशन कर पातीं।

किशोरः और एक बात बता दें चाचा जी, छोटा मुंह बड़ी बात। आप पता नहीं, जानते हैं या नहीं, लेकिन कानून के हिसाब से भी ये गलत है।

लखनः अब देखो, एक और बच्चा बोल रहा है। मुखिया जी, आप पंचायत करवा रहे हैं या बच्चों का खेल?

मुखिया जी (सख्ती से): देखो लखन, एक तो यह वैसे भी यह पंचायत गांव के किशोर–किशोरियों के कहने पर ही बुलाई गई है और अगर ऐसा न भी होता, तो बच्चे इस गांव के नागरिक नहीं हैं क्या?

हीरा चाचा जी: बच्चा हो या बड़ा, गांव के लोगों की सभा में सब बराबर हैं लखन, इसलिए बच्चों को बोलने दो।

लखन: चलिए, अब गांव भर ने हमारी बेइज्जती करने की ठान ही ली है, तो हम क्या करें। बताइए भाई किशोर कुमार जी, बिटिया हमारी पाला हमने, उसकी जिम्मेदारी हमारी है। हम जब उसकी शादी करें, जहां मर्जी करें, इसमें कानून क्या कर सकता है?

किशोर: कानून कर सकता है। बहुत कुछ कर सकता है। युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी ने बताया है कि.....

लखन (बीच में ही टोक देता है): अब ये युवा मैत्री केन्द्र क्या चीज है?

किशोर: सरकार की ओर से किशोर–किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत सरकारी अस्पतालों में युवा मैत्री केन्द्र बनाए गए हैं, जहां अनुभवी काउंसलरों द्वारा किशोर–किशोरियों को परामर्श दिया जाता है। युवा मैत्री केन्द्र में किशोर–किशोरियों को शरीर और मन की उलझनों का समाधान बताया जाता है, सही खान–पान और व्यायाम के बारे में जानकारी दी जाती है, कीड़ों और आयरन की गोली, नैपकिन और दवाएं मिलती हैं, और ये सब कुछ बिलकुल फ्री मिलता है। इसकी कोई फीस नहीं लगती।

बढ़ती उम्र के कुछ सवाल हैं, कुछ भ्रांतियां, कुछ शंकाएं,
इन मुश्किल प्रश्नों के उत्तर, शायद दोस्त नहीं दे पाएं,
युवा मैत्री केन्द्र पर आकर खुलकर मन की बात बताएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जी: ये तो बहुत बढ़िया बात है। हमारे समय में किशोर–किशोरियों के लिए ऐसी कोई सेवा नहीं थी। यह तो बहुत अच्छा है, भई मुनिया, जरा ये मामला हल हो जाए, तो तुम एक बार जरा विस्तार से युवा मैत्री केन्द्र के बारे में बताना, लेकिन अभी तो यह बताओ कि युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी ने कम उम्र में शादी के बारे में क्या बताया है?

मुनिया: उन्होंने बताया है कि 21 वर्ष से कम उम्र के लड़के तथा 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की की शादी गैर– कानूनी है। इस तरह की शादी करने और करवाने वालों को दो साल तक की सख्त सजा या एक लाख रूपए तक का जुर्माना लग सकता है।

लखन: तो क्या तुम हमें जेल भिजवाओगी? जरा सी लड़की की हिम्मत तो देखिए! बित्ते भर की लड़की और गज भर की जुबान।

मुनिया: ये मैंने कब कहा चाचा जी? मैं तो सिर्फ कानून के बारे में बता रही हूं।

लखन (थोड़ा डर गया है लेकिन फिर भी कहता है): मैं ऐसी धमकियों में आने वाला नहीं।

किशोर: लेकिन डर तो आप गए हैं लखन चाचा जी।

लखन: देखिए मुखिया जी, ये क्या हो रहा है?

मुखिया जी: थोड़ा संभल कर बोलो बेटा किशोर।

किशोर: माफी चाहता हूं मुखिया चाचा जी, गलती हो गई।

लखन: तुम बच्चे लोग फालतू का नाटक कर रहे हो। देखते हैं तुम्हारा साथ कौन देता है?

किशोर: मैं दूंगा मुनिया दीदी का साथ।

(कहते हुए किशोर मुनिया के साथ जाकर खड़ा हो जाता है।)

लखन: तुम्हारे साथ देने से क्या फर्क पड़ता है। तुम तो वैसे भी मुनिया के साथ ही रहते हो।

(कई किशोर–किशोरियां मुनिया के साथ आ जाते हैं।): हम भी मुनिया के साथ हैं।

लखन: अरे भागो यहां से। यहां कोई बच्चों का खेल नहीं हो रहा है।

हीरा चाचा जी: जरा संभल कर बात करो लखन।

किशोर: धन्यवाद चाचा जी। (लखन से कहता है) लखन चाचा जी, यहां बच्चों का खेल हो या न हो, मगर आपके घर में तो बच्चों का खेल हो ही रहा है और इस खेल को बच्चे नहीं, बल्कि बड़े खेल रहे हैं।

लखन: क्या मतलब?

मुनिया: मैं बताती हूं चाचा जी। बच्चों की शादी खेल है कि नहीं? आपको मालूम है कि हमारे गांव की सुनीता 15–16 साल की उम्र में बच्चे को जन्म देते हुए चल बसी।

लखन: मरना तो सबको है, हम भी मरेंगे, तुम भी मरोगी। मौत पर भी किसी का बस चला है क्या?

मुनिया: मौत पर तो सच में किसी का बस नहीं, लेकिन सही उम्र में शादी का फैसला लेना तो हमारे बस में ही है। आपको मालूम है कि कच्ची उम्र में मां बनना मां और बच्चे दोनों की जान को खतरे में डाल सकता है। 18 से पहले लड़की का शरीर मां बनना तो छोड़िये, शारीरिक संबंध के लिए भी तैयार नहीं होता।

लखन: देखो तो यह लड़की कितनी बेशर्म है।

हीरा चाचा जी: तुम तमीज से बात करो लखन। ये गांव के लोगों की पंचायत है, यहां न्याय होना है, यहां कोई छोटा या बड़ा, लड़का या लड़की नहीं हैं। वैसे भी यह लड़की तुमसे कहीं ज्यादा समझदार लग रही है।

मुनिया: इसमें कोई बेशर्मी नहीं है लखन चाचा जी। बेशर्मी तो खेलने–खाने की उम्र में बच्चों का ब्याह करने में है। लड़की ही नहीं, लड़के भी 21 साल से कम उम्र में शादी करके पिता बनने के लिए तैयार थोड़े ही होते हैं।

लखन: अच्छा यह बात है। (लोगों की ओर इशारा करते हुए) देखो गांव वालो, ये बच्चे हमारी बिटिया की शादी का विरोध कर रहे हैं और कोई है इनके साथ?

(एक आदमी और मुनिया के साथ हो जाता है।)

लखन: और भी कोई है इनके साथ?

(सोनी जो अब तक चुपचाप बैठी थी, उठ खड़ी होती है।)

सोनी: मैं हूं बाबा। मैं भी मुनिया दीदी के साथ हूं।

(लोगों में हलचल मच जाती है।)

सोनी की मां: अरे तू चुप रह। दिमाग खराब हो गया है क्या तेरा? सारे गांव के सामने खड़ी होकर बाप की बेइज्जती करवाएगी!

सोनी: नहीं माँ! मैंने फैसला कर लिया है, बाबा का अपमान करने की या करवाने की बात तो मैं सोच तक नहीं सकती, लेकिन अब यह मेरे जीवन का सवाल है। मेरे और सारे गांव की लड़कियों के सम्मान का सवाल है।

हीरा चाचा जी: बिटिया ठीक कह रही है लखन। अब यह सिर्फ लड़कियों के ही नहीं, सारे गांव के सम्मान का सवाल है।

लखन: अरे चाचा जी, आप भी इन बच्चों की बातों में आ गए!

हीरा चाचा जी: बच्चे जब सच्ची और अच्छी बात कहेंगे तो उनकी बात को मानना ही पड़ेगा। वैसे ये सब बातें उन्हें युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी ने भी तो बताई हैं।

मुखिया जी: गांव के मुखिया होने के नाते हम भी इस शादी के खिलाफ हैं। गांव के और लोग भी इसका विरोध करेंगे, हम भी मुनिया के साथ हैं।

लखन: अरे मुखिया जी, आप पर तो गांव की इज्जत बचाने की जिम्मेदारी है। आप को तो ऐसा नहीं करना चाहिए।

मुखिया जी: गांव की इज्जत के लिए ही ऐसा कर रहा हूं लखन।

लखनः अरे मुखिया जी, आप तो ऐसा न कीजिए।

मुखिया जीः मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा लखन। सभा में सब तुम्हारे खिलाफ हैं। भरी सभा में तुम्हारी बिटिया इस शादी के लिए मना कर रही है, फिर तुम जबरदस्ती उसकी शादी कैसे कर सकते हो?

(लखन अपना सर पकड़ लेता है।)

सोनी की मांः मुनिया, सोनी और मुखिया जी ठीक कह रहे हैं। हम भी नहीं होने देंगे अपनी बिटिया की शादी।

लखनः सोनी की मां, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या?

सोनी की मांः बिलकुल खराब हो गया है हमारा दिमाग। इतनी कम उम्र में हम अपनी बच्ची को कैसे ब्याह दें?

लखनः लेकिन.....

सोनी की मां (बीच में ही टोक देती है): अब आपकी कोई बात नहीं सुनूंगी जी। अरे इतनी फूल सी बच्ची आपको भारी पड़ने लगी। लड़की कोई गाय थोड़े ही है कि चाहे जिसके खूंटे पर बांध दो।

लखनः सोच लो सोनी की मां। तुम ने तो जीवन भर मेरा साथ निभाने का वचन दिया है (फिर अपना सर पकड़कर बैठ जाता है)।

सोनी की मांः सोच लिया जी (रोते हुए)। बहुत सोच लिया, सोच लिया कि अपनी बिटिया को इस उम्र में नहीं ब्याहने देंगे। उसे पढ़ाएंगे, लिखाएंगे और उसके बाद उसकी शादी करवाएंगे। आज तक हमने आपके किसी फैसले का विरोध नहीं किया, लेकिन आज हम चुप नहीं रहेंगे। आज हमारी बिटिया के जीवन का सवाल है। (और जोर से रोने लगती है, सोनी भी उससे लिपटकर रोने लगती है। वहां मौजूद सभी लोगों की आंख में आंसू आ जाते हैं)।

(अचानक जोरों से लखन के रोने की आवाज आती है। वह सोनी को गले लगाकर रोने लगता है। अन्य लोगों को भी रोना आ जाता है।)

लखन (रोते हुए, सोनी से): मुझे माफ कर दो बिटिया। मैं समाज के दबाव में आ गया था और अपनी फूल जैसी बच्ची की इतनी कम उम्र में शादी करने जा रहा था। (रोते हुए मुनिया की ओर घूमता है) और बिटिया, तुम भी मुझे माफ करना, मैंने तुम्हारी बहुत बेइज्जती की, लेकिन तुमने मेरी आंखें खोल दीं।

मुनियाः अरे नहीं चाचा जी, ऐसा न कीजिए। आप तो हमारे बड़े हैं।

लखनः लेकिन बुद्धि और समझ में तुमसे छोटा हूं बिटिया। माफ करना, मैंने तुमसे क्या–क्या नहीं कहा।

मुखिया जीः कोई बात नहीं लखन। अपने आपको संभालो। गलती सभी से होती है, लेकिन जो गलती को सुधार ले, वही सबसे समझदार होता है।

भोला चाचा जीः चलो भाई, मामला तो सुलझ गया। अब चला जाए क्या?

मुखिया जीः अभी नहीं चाचा जी। वो जो मुनिया बता रही थी युवा मैत्री केन्द्र के बारे में, वह भी तो सुन लिया जाए। हमारे गांव के किशोर–किशोरियों के काम आएगा। तो बताओ मुनिया और किशोर।

मुनियाः मुखिया चाचा जी, अगर आपकी अनुमति हो तो हम इसे गाकर सुना दें?

मुखिया जीः अरे यह तो और भी अच्छा रहेगा।

मुनियाः तो लीजिए सुनिए।

खुद भी बहुत भटकता है मन, और हमको भी भटकाता है,
क्यों शरीर ये बदल रहा है, और महीना क्यों आता है,
दोस्तों को कुछ पता नहीं हैं, मम्मी को कैसे बतलाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

किशोरः *सीखने–पढ़ने में दिक्कत हो, काम में ध्यान न लग पाता हो,*
नशे की आदत हो, टेंशन हो, बिन कारण मन घबराता हो,
चाहे कोई बीमारी हो, या फिर मन की हों दुविधाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः *कीड़ों और आयरन की गोली, और नैपकिन और दवा,*
और अनुभवी लोगों द्वारा काउंसलिंग की है सेवा,
सब कुछ फ्री, कोई फीस नहीं है, इस सुविधा का लाभ उठाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

किशोरः *पौष्टिक भोजन, जमकर कसरत, और नशे से बचकर रहना,*
कैंसर, शुगर और हार्ट की, बीमारी को दूर ही रखना,
आगे चलकर होने वाले रोगों की जानकारी पाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः *घर में या बाहर कोई तुमको, मारता–छेड़ता–धमकाता है,*
गलत तरह से छुए शरीर को, कुछ करने को बहकाता है,
मन ही मन में घुटन रहे, और किसी से कह न पाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

किशोरः *बढ़ता और बदलता तन–मन, कमजोरी–ज्यादा दुबलापन,*
दिक्कत कोई महीने की हो, या फिर कोई हो इन्फेक्शन,
इनका अच्छा समाधान है, इनसे बिलकुल न घबराएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः *कांउसलर हैं बड़े अनुभवी, आपके मन को ये समझेंगे,*
और एक अच्छे दोस्त के जैसे, बात को अपने तक ही रखेंगे,
इन प्यारे दोस्तों से मिलने, खुद आएं, दोस्तों को लाएं,
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जीः भई सुन लिया सभी ने? आप सभी लोग इस युवा मैत्री केन्द्र को याद रखिएगा। सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर जाएं।

मुनियाः अरे वाह! अब तो मुखिया जी भी युवा मैत्री केन्द्र का प्रचार करने लगे।

मुखिया जीः क्यों नहीं करेंगे! आखिर हमारे गांव के भविष्य का सवाल जो है।

(सबसे कहते हुए) चलिए भई, आज का नाटक यहीं समाप्त होता है।

बढ़ती उम्र के कुछ सवाल हैं

(जोसेफ गुमसुम और उदास सा बैठा हुआ है और किशोर उसकी तरफ आता हुआ।)

किशोरः अरे तुम यहां बैठे क्या कर रहे हो जोसेफ? चलो खेलने चलते हैं।

जोसेफः मेरा मन नहीं है, तुम जाओ।

किशोरः क्या हुआ, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?

जोसेफः (थोड़ा नाराज होते हुए) मेरी तबियत ठीक हो या खराब, तुम्हें क्या मतलब?

किशोरः मतलब कैसे नहीं है जोसेफ? तुम मेरे दोस्त हो, बताओ क्या बात है? इधर कई दिनों से तुम परेशान भी लग रहे हो। हर समय उदास रहते हो। चुपचाप बैठकर अपने आप में न जाने क्या–क्या सोचते रहते हो!

जोसेफः क्या बताऊं? रहने दो।

किशोरः अरे नहीं जोसेफ। बताने से शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर पाऊं। न बताने से तो समस्या का कोई हल नहीं निकलेगा।

जोसेफः तुम मेरी क्या मदद करोगे किशोर?

किशोरः ये तो मालूम नहीं कि मैं तुम्हारी कोई मदद कर पाऊंगा या नहीं, लेकिन भोलू की कहानी जरूर सुना सकता हूं।

जोसेफः मुझे नहीं सुननी कोई कहानी। वैसे ये भोलू कौन है?

किशोरः अरे वही अपना भोलू। मुनिया दीदी का छोटा भाई।

जोसेफः उसकी क्या कहानी है?

किशोरः अब यह तो सुनकर ही पता चलेगा कि उसकी क्या कहानी है। वैसे तो यह भोलू का अपना मामला था, इसलिए मुझे यह बात तुम्हें नहीं बतानी चाहिए थी, लेकिन भोलू खुद सबको अपनी यह कहानी सुना रहा है।

जोसेफः तो क्या भोलू ने कोई कहानी लिखी है?

किशोरः अरे नहीं, ये तो भोलू की खुद अपनी कहानी है।

जोसेफः तो फिर सुनाओ न।

किशोरः कुछ समय पहले की बात है, मुनिया दीदी का छोटा भाई भोलू कुछ दिनों से अजीब सा हो गया था। खेलने भी नहीं जाता था। चुपचाप किसी कोने में अकेले बैठा रहता था। खाना भी ठीक से नहीं खाता था और उसकी पढ़ाई भी ठीक नहीं चल रही थी।

जोसेफः (अब उत्सुकता दिखाने लगता है।): अच्छा! फिर क्या हुआ?

किशोरः मुनिया दीदी को तो तुम जानते हो। कितनी समझदार और जानकार हैं वह।

जोसेफः हां ये बात तो है।

किशोरः तो मुनिया दीदी ने बहुत कोशिश की, कि भोलू की परेशानी का कारण पता चले, लेकिन वह कुछ बताता ही नहीं था। मैंने भी एकाध बार कोशिश की, लेकिन ज्यादा पूछने पर वह उठकर चला जाता था।

जोसेफः (और भी उत्सुक हो जाता है) अच्छा! तो फिर मुनिया दीदी ने क्या किया?

किशोरः एक दिन मुनिया दीदी की मां की तबियत खराब थी, तो वह दवा लेने स्वास्थ्य केन्द्र गईं। मुनिया दीदी की उस दिन छुट्टी थी, तो वह भी मां के साथ चली गईं।

जोसेफः फिर क्या हुआ?

किशोरः वहां मुनिया दीदी को युवा मैत्री केन्द्र के बारे में पता चला।

जोसेफः यह युवा मैत्री केन्द्र क्या होता है?

किशोरः हम सब किशोर–किशोरियों को स्वास्थ्य संबंधित जानकारी देने के लिए सदर अस्पताल तथा स्वास्थ्य केन्द्रों पर युवा मैत्री केन्द्र बनाए गए हैं। वहां किशोर–किशोरियों की काउंसलिंग भी की जाती है।

जोसेफः ये काउंसलिंग क्या होता है?

किशोरः काउंसलिंग माने परामर्श, यानी सलाह। वहां किशोर–किशोरियों को कई तरह की जानकारी और सलाह दी जाती है।

जोसेफः अच्छा! तो फिर मुनिया दीदी ने क्या किया?

किशोरः करना क्या था? मुनिया दीदी ने युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी से बात की और अगले ही दिन मुनिया दीदी, भोलू और मैं, हम सब युवा मैत्री केन्द्र पहुंच गए।

जोसेफः फिर क्या हुआ किशोर?

किशोरः होना क्या था? जो बात भोलू हमसे छुपा रहा था, वह बात भोलू ने काउंसलर दीदी को बता दी।

जोसेफः लेकिन वही बात भोलू मुनिया दीदी को भी तो बता सकता था।

किशोरः बता तो सकता था, अगर मुनिया दीदी को भी काउंसलर दीदी की तरह परामर्श देने की ट्रेनिंग मिली होती।

जोसेफः तो परामर्श की ट्रेनिंग से कोई दूसरे के मन की बात जान जाता है?

किशोरः अरे नहीं जोसेफ। असल में काउंसलर दीदी इस तरह का माहौल बनाती हैं और इस तरीके से बात करती हैं कि कोई भी उन्हें मन की बात बता देता है।

जोसेफः अच्छा! तभी भोलू ने अपने मन की बात काउंसलर दीदी को बताई होगी, लेकिन एक बात बताओ किशोर कि भोलू की परेशानी थी क्या?

किशोरः असल में भोलू की दिक्कतें दो थीं। एक तो वह गणित में कमजोर था और डरा हुआ था कि कहीं इम्तिहान में फेल न हो जाए। दूसरा, वह शरीर में हो रहे बदलावों से परेशान था, लेकिन काउंसलर दीदी से बात करने के बाद अब भोलू को ही नहीं, मुझे भी पता हो गया है कि ये सब बदलाव तो हमारी उम्र में सभी के शरीर में होते हैं।

जोसेफः क्या तुम सच कह रहे हो? क्या तुम भी अपने शरीर में बदलाव महसूस कर रहे हो?

किशोरः बिलकुल, लेकिन अब हम लोग आराम से बैठकर बात करेंगे। उसके बाद अगर तुम चाहो, तो हम लोग युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी के पास भी चलेंगे।

जोसेफः चलो चलो, अभी चलते हैं, मेरे घर चलोगे?

किशोरः बिलकुल, चलो, चलते हैं।

(दृश्य बदलता है। किशोर और जोसेफ बात कर रहे हैं।)

जोसेफः युवा मैत्री केन्द्र में काउंसलर दीदी से मिलकर मेरे मन के वहम और डर दूर हो गए हैं, लेकिन यह सब जानकारियां तो हमारी उम्र के सभी किशोर–किशोरियों को मिलनी चाहिए।

किशोरः बात तो सही है, लेकिन इसके लिए क्या किया जाए?

(मुनिया आ जाती है।)

मुनियाः क्या करने की सोच रहे हो किशोर और जोसेफ?

किशोरः अरे आओ दीदी। जोसेफ कह रहा था कि युवा मैत्री केन्द्र में काउंसलर दीदी ने हम सब को जो जानकारी दी है, वह जानकारी सभी किशोर–किशोरियों तक पहुंचनी चाहिए।

मुनियाः अरे वाह! तुम तो बहुत अच्छा सोच रहे हो। मैं कई दिनों से यही सोच रही थी, लेकिन अब हम तीन लोग हैं।

किशोरः सिर्फ तीन लोग नहीं हैं दीदी. भोलू, सोनी और हमारे दोस्त भी इसमें साथ देंगे।

मुनियाः तब तो हम लोग आशा दीदी, आंगनवाड़ी दीदी, ए.एन.एम. दीदी वगैरह सभी से बात करेंगे।

जोसेफः मुखिया जी और स्कूल के टीचर भी हमारे साथ रहेंगे।

किशोरः तो फिर क्या किया जाए?

जोसेफः क्यों न हम लोग कुछ गीत, कहानी, नाटक बनाएं?

मुनियाः अरे वाह! यह तो बहुत अच्छा रहेगा।

मुनियाः तो फिर तैयारी शुरू करते हैं। छुट्टी के दिन हम लोग सभी को साथ लेकर गांव में घूमेंगे।

किशोरः गीत, कहानी और नाटक से हम लोग किशोर–किशोरियों के लिए जरूरी सन्देश देंगे।

जोसेफः लेकिन मैंने कभी कोई गीत नहीं लिखा।

किशोरः गीत गाना तो आता है? शुरू में तुम गाओगे और फिर लिखना भी सीख जाओगे।

मुनियाः मैं लिखूंगी गीत और तुम सब लोग मदद करना।

किशोरः ठीक है। बाकी लोगों से भी बात करते हैं।

(तीनों चल देते हैं। दृश्य बदलता है। मुनिया, किशोर, भोलू, सोनी, जोसेफ और मुखिया जी इकट्ठा होते हैं।)

मुखिया जीः तुम लोगों ने बहुत अच्छे काम की शुरुआत की है। गीतों के माध्यम से हम लोग अपनी बात दूसरों तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। मेरी सब लोगों से बात हो गई है, लेकिन यह तो बताओ कि अब तक तुम लोगों ने क्या तैयारी की है?

मुनियाः काफी तैयारी हो गई है मुखिया चाचा। बाकी आज आपके साथ बैठकर करनी है।

मुखिया जीः तो फिर शुरू करते हैं। शुरुआत तुम करो मुनिया।

मुनियाः *बिलकुल मुखिया चाचा, तो सुनिए मैंने क्या लिखा है.....।*

बढ़ती उम्र के कुछ सवाल हैं, कुछ भ्रांतियां, कुछ शंकाएं
इन मुश्किल प्रश्नों के उत्तर, शायद दोस्त नहीं दे पाएं,
युवा मैत्री केन्द्र पर आकर खुलकर मन की बात बताएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जीः बहुत बढ़िया कविता लिखी तुमने, लेकिन क्या इतने से ही सभी की समझ में आ जाएगा कि बढ़ती उम्र के क्या सवाल हैं। इस उम्र की भ्रांतियां और शंकाएं क्या हैं!

मुनियाः बात तो ठीक है मुखिया चाचा। इस बात को और थोड़ा समझाना पड़ेगा। चलो भाई भोलू, तुम बताओ कि क्या भ्रांतियां और शंकाएं हैं तुम्हारी उम्र की? क्या होता है तुम्हारी उम्र में?

भोलूः हमारी उम्र की खास बात यह है कि इसमें....।

मुखिया जीः नहीं ऐसे नहीं, कविता में बताओ, जैसे मुनिया ने बताया।

भोलूः लेकिन मुझे कविता नहीं आती।

मुनियाः तुम कोशिश तो करो भोलू, हम सब मदद करेंगे।

जोसेफः अरे आप लोगों को पता नहीं, भोलू हंसाने वाली कविताएं लिखता है।

मुखिया जीः ये तो और भी अच्छी बात है। थोड़ी हंसी भी हो जाए।

भोलूः तो लीजिए, सुनिए.....।

मन–शरीर में, दिल–दिमाग में, आते हैं बदलाव
बस डांटते ही रहते हैं सब, कोई देता नहीं सुझाव,

(सब हंसते हैं)

मुखिया जीः (हंसते हुए) अरे वाह! ये तो बहुत बढ़िया है।

भोलूः लगता है, कविता में मजा नहीं आया।

मुखिया जीः अरे आया भाई, बहुत मजा आया।

भोलू (बनावटी शिकायत करते हुए): लेकिन आप लोग ठीक से हंस नहीं रहे हैं।

मुनियाः अरे नहीं भोलू, तुम आगे सुनाओ। अब हम और भी जोर से हंसेंगे।

भोलूः
अजीब सा लगने लगता है अपना ही शरीर
हर किशोर–किशोरी की समस्या है गंभीर,
दाढ़ी मूंछें उगने लगतीं, बदल गई आवाज
माहवारी क्यों शुरू हो गई, आता नहीं अंदाज,
परेशान हैं भोलू भैया चेहरा दिखे कहां से
आधे में दाढ़ी–मूंछें, आधे में कील–मुंहासे।

(सब हंस पड़ते हैं।)

मुखिया जीः अरे वाह बेटा भोलू, तुमने तो कमाल का लिखा है।

भोलूः सब आपका आशीर्वाद है मुखिया चाचा। लीजिए एक दोहा आपके लिए भी।

मुखिया जीः सुनाओ।

भोलूः
बच्चे हमको बड़ा समझते, बड़े समझते बच्चा
लेकिन अब हैं साथ हमारे, प्यारे मुखिया चच्चा।

मुनियाः सही बात है। मुखिया चाचा के साथ आने से हमारी हिम्मत बहुत बढ़ गई है।

भोलूः ये तो रहे दोहे। अब एक शेर भी सुन लीजिए।

किशोरः वह भी सुना दो।

भोलूः अर्ज किया है कि –

कितने सवाल हमारे और कितनी हैं चिन्ताएं
पूछें तो किससे पूछें, जाएं तो कहां जाएं।

मुनियाः अरे वाह! तुम्हारी हंसने वाली कविताओं में भी गहरे सन्देश छुपे हुए हैं। (दर्शकों से) वैसे भोलू ठीक कह रहा है। किशोर–किशोरियों की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि उन्हें मालूम नहीं होता कि अपनी उलझनों को कैसे सुलझाएं। इसके बारे में किससे बात करें, यह पता नहीं होता। दोस्त और भाई–बहनों को अक्सर आधी अधूरी या गलत जानकारी होती है और बड़ों से बात करने की हिम्मत नहीं होती।

सोनीः ऐसे में युवा मैत्री केन्द्र ही ऐसी जगह है, जहां सही सलाह मिल सकती है।

मुखिया जीः ठीक कहा सोनी। भोलू की हंसने वाली कविता के बाद अब किसकी बारी है?

किशोरः
मेरी बारी है बिलकुल मुखिया चाचा। लीजिए, सुनिए।
खुद भी बहुत भटकता है मन, और हमको भी भटकाता है
क्यों शरीर ये बदल रहा है, और महीना क्यों आता है,
दोस्तों को कुछ पता नहीं हैं, मम्मी को कैसे बतलाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया चाचाः अरे वाह किशोर! तुमने तो कमाल कर दिया। अब कविता को आगे कौन बढ़ाएगा?

मुनियाः मुखिया चाचा, आगे बढ़ने से पहले क्यों न हम यह तय कर लें कि कविता में कहना क्या है! किशोर, तुम शुरू करो।

किशोरः किशोरावस्था में कुछ लोगों को पढ़ाई में दिक्कत होती है। किसी भी काम में ध्यान नहीं लग पाता।

सोनीः कई किशोर–किशोरियों को दिमागी तनाव या डिप्रेशन हो जाता है। सबसे बड़ी परेशानी तो तब होती है, जब किसी किशोर–किशोरी को नशे की लत लग जाती है।

भोलूः किसी भी तरह का नशा करना बहुत खतरनाक है। इससे आगे चलकर खतरनाक और जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं, पैसों की बर्बादी होती है, नशे में मारपीट–झगड़े और एक्सीडेंट भी हो जाते हैं और परिवार व समाज पर भी बुरा असर पड़ता है।

मुनियाः सिर्फ सेहत और शरीर की दिक्कतों के लिए ही नहीं, बल्कि मन की परेशानियों के लिए भी किशोर–किशोरियां युवा मैत्री केन्द्र पर जा सकते हैं।

जोसेफः जब इतना सब बता दिया तो मैं भी कविता लिख सकता हूं।

मुखिया जीः अरे वाह! यहां तो सब कवि बन गए हैं।

जोसेफः *संगत का असर है मुखिया चाचा। तो लीजिए, कविता सुनिए।*
सीखने–पढ़ने में दिक्कत हो, काम में ध्यान न लग पाता हो
नशे की आदत हो, टेंशन हो, बिन कारण मन घबराता हो,
चाहे कोई बीमारी हो, या फिर मन की हों दुविधाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जीः अरे वाह! तुमने तो दिल खुश कर दिया जोसेफ, शाबाश बेटा।

जोसेफः धन्यवाद मुखिया चाचा।

भोलूः मुनिया दीदी, एक बात बताओ।

मुनियाः बोलो भोलू।

भोलूः अगर कोई किशोर–किशोरी कमज़ोर हो, तो क्या उसे भी युवा मैत्री केन्द्र भेज सकते हैं?

मुनियाः बिलकुल। किशोरावस्था शरीर के बढ़ने की उम्र है। इस उम्र में शरीर में कई बदलाव आते हैं। बढ़ते शरीर को ज्यादा पोषण की जरुरत होती है, लेकिन ठीक खान–पान न होने से कमज़ोरी, बीमारी और इन्फेक्शन हो सकते हैं।

सोनीः कई बार लड़कियों को महीना यानी माहवारी की दिक्कतें भी रहती हैं।

भोलूः इन सबके बारे में सही जानकारी और सलाह युवा मैत्री केन्द्र पर दी जाती हैं।

किशोरः इसे मैं पूरा करता हूं।

बढ़ता और बदलता तन–मन, कमज़ोरी–ज्यादा दुबलापन
दिक्कत कोई महीने की हो, या फिर कोई हो इन्फेक्शन,
इनका अच्छा समाधान है, इनसे बिलकुल न घबराएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः अरे वाह! किशोर ने तो बहुत अच्छे से कविता को आगे बढ़ाया है, अब हम इसे दूसरों को भी सिखा सकते हैं।

भोलूः मुनिया दीदी, काउंसलर दीदी ने और भी कुछ बातें बताईं हैं। उन्होंने बताया है कि बड़ी उम्र में बीमारियां न हों, इसलिए बचपन से ही फल और सब्ज़ियों का सेवन करना चाहिए। तेल, घी, चीनी, नमक कम खाना चाहिए, फास्ट फूड तो बिलकुल ही नहीं और सेहत ठीक रहे, इसके लिए खेलकूद और कसरत करनी चाहिए।

मुनियाः *कविता के इस हिस्से को मैं ही आगे बढ़ाती हूं।*
पौष्टिक भोजन, जमकर कसरत, और नशे से बचकर रहना
कैंसर, शुगर और हार्ट की, बीमारी को दूर ही रखना,
आगे चलकर होने वाले रोगों की जानकारी पाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

किशोरः बस इतना ही बताया काउंसलर दीदी ने?

भोलूः उन्होंने यह भी बताया कि खून की कमी से बचाव के लिए आयरन वाला खाना ज्यादा खाना चाहिए। उन्होंने कीड़ों की गोली और आयरन की गोली के बारे में भी बताया।

मुनियाः आयरन की और कीड़ों की गोली तो युवा मैत्री केन्द्र पर भी मिलती हैं।

सोनीः नैपकिन और दवाएं भी तो मिलती हैं वहां।

जोसेफः और वह भी पूरी तरह मुफ्त।

भोलूः *गीत के इस हिस्से को मैं पूरा करता हूं।*
कीड़ों और आयरन की गोली, और नैपकिन और दवा
और अनुभवी लोगों द्वारा काउंसलिंग की है सेवा,
सब कुछ फ्री, कोई फीस नहीं है, इस सुविधा का लाभ उठाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जी: अरे वाह! भोलू ने तो बहुत बढ़िया से गीत को आगे बढ़ाया। सब तो गीत बनाने में लगे हैं, लेकिन सोनी बिटिया, तुम क्या सुनाओगी?

सोनी: मैं तो अपने गांव की एक किशोरी की कहानी सुनाऊंगी।

मुखिया जी: चलो फिर सुनाओ।

सोनी: तो सुनिए.....। मेरे गांव में एक किशोरी लड़की रहती थी। यह घटना तब घटी, जब उसकी बुआ की शादी थी। आप तो जानते ही हैं कि खराब लोग तो हर जगह होते हैं। शादी की उस भीड़भाड़ में बड़ी उम्र का एक आदमी, जो किशोरी का दूर का रिश्तेदार भी था, उसने अकेले में किशोरी को कुछ गंदी बातें कहीं और उसे छूने की कोशिश की। किशोरी तो बहुत घबरा गई थी।

जोसेफ: अरे बाप रे!

सोनी: लेकिन न जाने कहां से उसके अन्दर हिम्मत आई और वह उस गंदे आदमी को धक्का देकर किसी तरह बचकर निकल गई।

जोसेफ: फिर क्या हुआ?

सोनी: उस समय तो वह बच गई तो निकल आई, लेकिन वह बहुत ज्यादा घबरा गई थी।

जोसेफ: तो फिर क्या उस आदमी ने.....।

सोनी: नहीं, क्योंकि अब किशोरी भीड़ में आ गई थी। वह आदमी उसके साथ अब कुछ गलत नहीं कर सकता था। वह सोच रही थी कि इस बात को किसी बड़े को बताए, लेकिन तभी वह आदमी उसके बगल में आया और धीमी आवाज़ में उससे बोला कि अगर किशोरी ने इस बात को किसी को बताया, तो वह उलटा किशोरी की बदनामी कर देगा और उसके पिता को मार डालेगा। इससे किशोरी दबाव में आ गई। वह हर समय सहमी और डरी–डरी रहने लगी।

जोसेफ: फिर उसने क्या किया सोनी?

सोनी: हमारे पास तो सौ दुखों की एक ही दवा है।

जोसेफ: क्या युवा मैत्री केन्द्र की काउंसलर दीदी?

सोनी: हां। किशोरी को सहमी और डरी हुई देखकर मुनिया दीदी ने उसे और उसकी मां को काउंसलर दीदी के पास भेज दिया।

जोसेफ: फिर क्या हुआ? क्या मामला सुलझ गया?

सोनी: मुनिया दीदी की बात मानकर किशोरी अपनी मां के साथ युवा मैत्री केन्द्र गई। काउंसलर दीदी किशोरी के पिता से भी मिली। जब बात सामने आई, तो सभी लोग गांव के मुखिया जी और प्रमुख लोगों से मिले। सबने मिलकर किशोरी को

परेशान करने वाले व्यक्ति से बात की और उसे जमकर डांट लगाई। पहले तो उसने अपनी हरकत को साफ–साफ मना कर दिया, लेकिन थाना–पुलिस की बात करने पर उसने अपनी गलती मान ली, और माफी मांगने लगा।

किशोरः यह तो बहुत अच्छा हुआ।

सोनीः अच्छा तो हुआ, लेकिन सोचिए, अगर वह किशोरी अपनी मां के साथ युवा मैत्री केन्द्र न जाती, तो उसका क्या हाल होता!

जोसेफः अच्छा हुआ कि वह किशोरी युवा मैत्री केन्द्र चली गई। नहीं तो उसका क्या होता!

भोलूः हो सकता है कि वह दुष्ट आदमी फिर से उस किशोरी की बेबसी का फायदा उठाकर उसे परेशान करता।

मुनियाः बिलकुल, ऐसा अक्सर होता है।

जोसेफः इस तरह की बातों का तो जमकर विरोध होना चाहिए।

मुखिया जीः इस तरह की ही नहीं, हर तरह की हिंसा का विरोध तुरंत करना चाहिए।

मुनियाः आप ठीक कहते हैं चाचा जी। मारपीट के अलावा भी कई तरह की हिंसा हो सकती हैं। मारपीट तो शारीरिक हिंसा है ही, लेकिन अगर कोई आपको गाली दे, डराए या ताने कसे, तो वह भी हिंसा है। मौखिक यानी जुबानी हिंसा।

मुखिया जीः ऐसे ही अगर कोई आपके साथ लड़का या लड़की होने के कारण यानी लिंग आधारित भेदभाव करे, या जबरदस्ती करे या आप पर दबाव डाले, तो यह भावनात्मक हिंसा है।

सोनीः इसी तरह अगर कोई व्यक्ति किसी लड़के या लड़की के साथ छेड़छाड़ करे, शारीरिक टिप्पणी करे या गलत तरीके से छुए तो यह यौन हिंसा है।

किशोरः अगर किसी भी किशोर–किशोरी के साथ हिंसा हो रही है, तो उन्हें तुरंत किसी भरोसेमंद व्यक्ति को बताना चाहिए।

सोनीः चुप रहने से बदतमीजी या दूसरी तरह की हिंसा करने वाले व्यक्ति का हौसला बढ़ता है। तो लीजिए, मैं कविता को आगे बढ़ाती हूं।

घर में या बाहर कोई तुमको, मारता–छेड़ता–धमकाता है
गलत तरह से छुए शरीर को, कुछ करने को बहकाता है,
मन ही मन में घुटन रहे, और किसी से कह न पाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुखिया जीः अरे वाह सोनी बिटिया, तुमने तो कहानी के साथ–साथ गीत को भी आगे बढ़ा दिया, शाबाश।

सोनीः धन्यवाद मुखिया चाचा। लेकिन मैं आप लोगों को एक बात बताना चाहती हूं।

मुखिया जीः वह क्या?

सोनीः बात यह है कि मैंने जिस किशोरी की कहानी सुनाई, वह कोई और नहीं, बल्कि मैं ही हूं। यह मेरी ही कहानी थी, लेकिन अब मैंने संकल्प लिया है कि मुनिया दीदी, किशोर जैसे सब दोस्तों के साथ मिलकर इस तरह की घटनाओं पर आवाज उठाऊंगी।

मुखिया जीः बहुत बढ़िया सोनी। सोनी के लिए सभी ताली बजाओ भाई।

(सब ताली बजाते हैं।)

भोलूः लेकिन मुखिया चाचा, गीत में एक जरूरी बात तो रह ही गई।

मुखिया जीः वह क्या?

भोलूः कम उम्र में शादी वाली बात। चलिए मैं ही शुरू करता हूं। अक्सर कम उम्र में शादी करने से लड़के और लड़की की पढ़ाई बीच में ही रुक जाती है। छोटी सी उम्र में ही उन पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है।

किशोरः कम उम्र में शादी करना लड़के और लड़की दोनों के लिए ही ठीक नहीं है। दोनों ही शरीर और मन से इसके लिए तैयार नहीं होते।

मुनियाः कच्ची उम्र में मां बनना, मां और बच्चे दोनों की जान को खतरे में डाल सकता है। 18 से पहले लड़की का शरीर, मां बनना तो छोड़िये, शारीरिक संबंध के लिए भी तैयार नहीं होता।

जोसेफः और 21 से कम उम्र में लड़के की और 18 से कम उम्र में लड़की की शादी करना गैर कानूनी है।

मुनियाः *गीत के इस हिस्से को मैं पूरा करूंगी।*
यूं तो वैसे ही गुनाह है, कम आयु में शादी करना
जानलेवा भी हो सकता है, छोटी उम्र में ही मां बनना,
कच्ची उम्र में माता–पिता बनने के खतरे बतलाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

मुनियाः इसलिए किशोर–किशोरियां यहां आएं।

मुखिया जीः उनके माता–पिता और घर के बड़े भी किशोर–किशोरियों को लेकर आएं।

किशोरः युवा मैत्री केन्द्र में किशोर–किशोरियों के सब प्रश्नों के उत्तर और सब शंकाओं के समाधान हैं।

काउंसलर हैं बड़े अनुभवी, आपके मन को ये समझेंगे
और एक अच्छे दोस्त के जैसे, बात को अपने तक ही रखेंगे,
इन प्यारे दोस्तों से मिलने, खुद आएं, दोस्तों को लाएं
सब प्रश्नों के उत्तर पाएं, युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

भोलूः अरे वाह! हमारा गीत तो पूरा हो गया।

मुखिया जीः तुम सब को बधाई।

भोलूः और हमारी मिठाई?

मुखिया जीः (हंसते हुए) अरे वह भी मिलेगी भाई। मिठाई खाने के बाद ही हम लोग गांव में गीत गाते और नाटक दिखाते हुए निकलेंगे। (दर्शकों से) तो भाई दर्शकों, अब क्या नाटक में भी नाटक देखेंगे? यही तो था हमारा नाटक। तो बताइए कि किशोर–किशोरियों के कई तरह के सवालों का, शंकाओं का, भ्रान्तियों का और दुविधाओं का एक हल क्या है?

सब एक साथ बोलते हैं.....युवा मैत्री केन्द्र।

मुखिया जीः सब प्रश्नों के उत्तर पाएं।

सबः युवा मैत्री केन्द्र पर आएं।

(नाटक समाप्त होता है।)